**DR.MALA KUMARI**

**ASSISTANT PROFESSOR (GUEST**

**TEACHER)**

**DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY**

**A.N.D COLLEGE SHAHPUR**

**PATORY,SAMASTIPUR**

**B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)**

**PAPER-3 ,UNIT-8,**

**NATURE OF DREAM**

**LECTURE-94**

## स्वप्न का स्वरूप

## NATURE OF DREAM

स्वप्न एक ऐसी धटना है जो हम सबो के साथ धटित होता है | हम सभी लोग स्वप्न देखते है | कभी स्वप्न सुखद होते है ,तो कभी दुःखद होते है |कभी –कभी स्वप्न मिश्रित होते है ,अर्थात उसका कुछ अंश सुखद होता है ,तो कुछ अंश दुःखद होता है |इस तरह से स्वप्न हमारे जीवन का एक भाग होता है जिसके बारे में जानने की उत्सुकता हम सभी को हमेशा बनी रहती है |आदिकाल से ही स्वप्न के स्वरूप को समझने के लिए विशेषज्ञों ,दार्शनिकों, लेखको एवं शरीर विज्ञानियों ने काफी कोशिश किया है |इन लोगों में हिपोक्रेट्स ,अरस्तु ,गैलेन ,ल्युक्रिटिअस ,सिमेरो आदि के नाम अधिक मशहूर है | आदिकाल के दार्शनिको एवं विशेषज्ञों का मत था कि स्वप्न का स्वरूप अलौकिक होता है |अतः स्वप्न के समय आत्मा शरीर से अलग होकर भ्रमण करती है |इस अवस्था में आत्मा जो कुछ भी देखती है या सुनती है, वही स्वप्न है |यही कारण है कि इन लोगों का विचार है कि सोये हुए व्यक्ति को अचानक नहीं उठाना चाहिए अन्यथा आत्मा शरीर में

प्रवेश नहीं कर पायेगी जिससे व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है |कुछ दार्शनिको का मत है की स्वप्न दैविक शक्ति का एक प्रतिफल है |जब व्यक्ति पर भगवान् खुश रहते है ,तो वह सुखद स्वप्न देखते है और जब व्यक्ति से भगवान् रुष्ट हो जाते है ,तो वह दुखद स्वप्न देखता है |बाद में कुछ लोगों ने जिसमे सिसेरो का नाम अधिक मशहूर है ,बतलाया की स्वप्न का स्वरूप अर्थहीन होता है |फलस्वरूप स्वप्न गत दिनों के अनुभूतियों से उत्पन्न आकस्मिक प्रतिमाओं का एक अर्थहीन कड़ी है |परन्तु स्वपन्न के इस अर्थहीन स्वरूप की मान्यता अधिक दिनों तक नहीं बनी रही |

फिर कुछ लोगों ने स्वप्न के स्वरूप की व्याख्या शरीर के भीतर होने वाले परिवर्तन के रूप में करने की कोशिश किया है |किसकर (1964) के अनुसार अरस्तु सबसे पहले दार्शनिक थे जिसके अनुसार स्वप्न उन भीतरी दैहिक परिवर्तनों द्वारा उत्पन्न होता है जिसे व्यक्ति जागृतावस्था में अनुभव नहीं कर पाता है |बाद में ल्युक्रिटिअस ने अपनी पुस्तक 'डी रीरम नैचुरा' में यह बतलाया है कि स्वप्न का संबंध जागृत अवस्था की क्रियाओं एवं उन शारीरिक आवश्यकताओ से होता है जिसकी संतुष्टि की जाती है |थॉमस हाल्स एवं इमैन्युल कांट ने ऐसा ही विचार व्यक्त करते हुए कहा है की शारीरिक उद्दीपको के कारण व्यक्ति में स्वप्न उत्पन्न होता है |आजकल मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्वप्न के स्वरूप की व्याख्या कुछ दुसरे ढंग से की जाती है |आधुनिक मनोवैज्ञानिकों जैसे फ्रायड,एडलर ,युंग ,ब्राउन ,आदि का मत है की स्वप्न एक मानसिक प्रक्रिया है | इन लोगो के अनुसार भिन्न-भिन्न तरह की मानसिक क्रियाएं लगातार चलती रहती है और स्वप्न भी इन्ही लगातार चलने वाली क्रियाओं में से एक है | इन मनोवैज्ञानिकों के अनुसार स्वप्न हमारे जीवन की घटनाओं से संबंधित होता है और इसका स्वरूप कुछ विभ्रमिक होता है | शायद यही कारण है की स्वप्न टूट जाने एवं नींद खुल जाने पर स्वप्न के अनुभव तेजी से समाप्त होते दीख पड़ते है |इसी पृष्ठभूमि में ब्राउन तथा मेनिनगर (1940) ने स्वप्न के अर्थ को समझाते हुए कहा है , "स्वप्न विभ्रम है जिन्हें हम सभी प्रत्येक रात्री अनुभव करते है

और जब हम जागते है तो इनका विभ्रमिक स्वरूप बिल्कुल ही स्पष्ट हो जाता है |"

पेज के अनुसार (1974) "स्वप्न में अचेतन के संघर्षो की झलक मिलती है,दमित इच्छाओं की अभिव्यक्ति होती है तथा फ्रायड द्वारा इसे अचेतन की ओर जाने वाला एक राजकीय मार्ग कहा गया है |"

इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट है की स्वप्न में निम्नलिखित तथ्यों कि प्रधानता होती है –

(i) स्वप्न निद्रावस्था की एक विशेष मानसिक प्रक्रिया है जो निरन्तर होती है |

(ii) स्वप्न में विभ्रामक अनुभूतियाँ होती है |

(iii) स्वप्न में अचेतन में दमित इच्छाओं की अभिव्यक्ति होती है | यही कारण है की स्वप्न अचेतन की ओर जाने वाला एक राजकीय मार्ग है |

इस तरह से यह कहा जा सकता है की स्वप्न निद्रावस्था की एक ऐसी मानसिक स्थिति है जिसका संबंध हमारे व्यक्तिगत घटनाओं ,इच्छाओं ,संघर्षो आदि से होता है |